

किसी का तुम्हे जब सहारा न हो

किसी का तुम्हे जब सहारा न हो,
जहां में कोई जब तुम्हारा न हो,
आ जाना तब तुम शरण में मेरी,
मेरा दर खुला है खुला ही रहे गा तुम्हरे लिये
किसी का तुम्हे जब सहारा न हो,

मिले जो ज़माने की ठोकर तुझे उठा कर गले से लगा लुंगी मैं,
जो रुसवा करे तेरे अपने तुझे तो समान तुझको दिलाऊंगी मैं ,
जो गर्दिश में तेरा गुजारा न हो भटकना भी तुझको गवारा न हो,
आ जाना तब तुम शरण में मेरी,
मेरा दर खुला है खुला ही रहे गा तुम्हरे लिये
किसी का तुम्हे जब सहारा न हो,

अकेले नहीं तुम ही संसार में है तुम से कई मेरे दरबार में,
ना छोडू गी तुमको मझदार में मिला लुंगी अपने ही परिवार में,
अगर तू किसी का दुलारा न हो किसी की भी आँखों का तारा न हो,
आ जाना तब तुम शरण में मेरी,
मेरा दर खुला है खुला ही रहे गा तुम्हरे लिये
किसी का तुम्हे जब सहारा न हो,

दुखी दीं हीं की मुश्कानो में मेरा रूप तुझको नजर आएगा,
जो इन्शानियत न हो इंसान में वो जानवर ही तो कहलायेगा,
किसी ने तुझे तुझे अगर सवारा न हो तेरी गलतियों को सुदारा न हो,
आ जाना तब तुम शरण में मेरी,
मेरा दर खुला है खुला ही रहे गा तुम्हरे लिये
किसी का तुम्हे जब सहारा न हो,

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/10180/title/kisi-ka-tumhe-jab-sahara-na-ho-jahan-me-koi-jab-tumahara-na-ho>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |